असल संकट

जे. कृष्णमूर्ति

असल संकट

ऐसा लगता है कि इतिहास जैसे आदमी द्वारा लाई गई तबाहियों और बरबादियों की एक कहानी हो, जो कहीं थमती नज़र नहीं आती, बार-बार बिना चूके खुद को दोहराए चली जाती है, और हर बार संसार को अचानक ही आ दबोचती है और वह हैरानी में मुँह बाए खड़ा देखता ही रह जाता है, माहिरों और विद्वानों के तमाम वायदे और भविष्यवाणियां धरी की धरी रह जाती हैं। सब हिसाब-किताब, बुद्धि, तर्क-दलील कुछ काम नहीं आता; आदमी खुद को पूरी तरह बौखलाया हुआ और असहाय-सा महसूस करता है। एक संकट और दूसरे संकट के बीच जो फ़ासला है बस उसी को हम अपना आम जीवन कहते हैं। इस कथित आम जीवन में हम हर चीज़ में अपनी ऊर्जा और समय खपाते हैं लेकिन इस चीज़ को ले कर कभी गंभीरता से विचार नहीं करते कि आखिर मानवीय जीवन का और खुद हमारे अपने जीवन का मतलब क्या है। हम कभी यह सवाल नहीं उठाते कि क्या हमारी खुद की रोज़ाना की ज़िंदगी अपने आप में ही एक बरबादी नहीं है, संसार के आने वाले संकट के बीज क्या उसी में नहीं छुपे हैं। हो सकता है यह सवाल कभी हमारे सामने खड़ा ही न हुआ हो, और अगर कभी आया भी हो, तो हमने उसका सामना करने की हिम्मत ही न की हो।

यही तो वह चुनौती है जो कृष्णमूर्ति हमारे सामने खड़ी करते हैं--और मजबूर करते हैं कि हम परेशान करने और चुभने वाले इन बेशुमार सवालों का सामना करें, ऐसे ही कुछ सवाल यहाँ पर दिए गए हैं, जिन्हें करीब-करीब पाँच दशकों के दौरान, 1934 से 1985 तक की उनकी वार्ताओं और लेखन से उद्धृत किया गया है।

© 2020, Krishnamurti Foundation India

Madras,
22 October 1947;
The Collected Works, Vol. IV.

संसार का मौजूदा संकट अपने आप में बिलकुल अनूठा है; अतीत में शायद ही ऐसे कुछ संकट पहले रहे हों। मौजूदा संकट कोई आम किस्म की तबाही नहीं है जो आदमी के जीवन में घटती ही रहती है। यह उथल-पुथल तो पूरी दुनिया में मची है; यह भारतीय या यूरोप की नहीं है बल्कि दुनिया के हर कोने में अपने पाँव पसार रही है। जिस्मानी तौर पर और मानसिक तौर पर भी, नैतिक, रूहानी, सामाजिक, आर्थिक हर तरह से उलझाव और अलगाव फैलते जा रहे हैं। हम एक गहरी खाई के किनारे खड़े हैं और अपनी छोटी-छोटी बातों को लेकर लड़-झगड़ रहे हैं। यह वैश्विक संकट कितना गहरा है और किस हद तक परेशान कर देने वाला--बहुत थोड़े ही लोग इसे समझते हुए नज़र आ रहे हैं। कुछ हैं जो इस उलझाव को महसूस करते हुए, उसी खाई के किनारे ही जीवन के ढंग-तरीकों को नए सिरे से जमाने में जुटे हैं, क्योंकि वे खुद उलझन में हैं, इसलिए और ज़्यादा उलझनें ही खड़ी कर रहे हैं।

Madras,
22 October 1947;
The Collected Works, Vol. IV.

यह भयानक मुसीबत यूँ ही कोई अचानक सामने नहीं आ गई; इसे हम सबने मिलकर पैदा किया है--ईर्ष्या और जुनून से भरी रोज़ाना की अपनी गतिविधियों से, लोभ-लालच और सत्ता और दबदबे की लालसाओं से, मुकाबलेबाज़ी और बेरहमी के ज़रिये, ऐंद्रिय और तात्कालिक मूल्यों से। हम ही इस भयानक दुःख और उलझाव के लिए ज़िम्मेदार हैं, कोई दूसरा नहीं, आप और मैं ही उत्तरदायी हैं। चूंकि आप विचारहीन, अन-जागे, सोये-सोये-से, अपनी महत्त्वाकांक्षाओं, ऐंद्रिय सनसनियों और उनके पीछे भागने में फँसे, सिर से पाँव तक ऐसे मूल्यों में लिपटे हुए हैं जो बस तात्कालिक तौर पर तृप्ति देने वाले हैं, आप ही ने मुँह बाए खड़ी इस दैत्याकार मुसीबत को जन्म दिया है... किसी खास समूह ने, या किसी खास व्यक्ति ने नहीं, बल्कि आपने।

*New Delhi,
14 November 1948;
The Collected
Works, Vol. V.*

अब, आज का यह संसार है क्या? आज का यह संसार तकनीकी और इन बड़ी-बड़ी संस्थाओं की काम करने की कुशलता से बना है। तकनीक के मामले में इन दिनों बहुत ज़बरदस्त तरक्की हुई है और साथ ही ज़रूरत की चीज़ों के बंटवारे में भारी गड़बड़ी भी; पैदावार के साधन कुछ ही लोगों के हाथों में हैं, प्रभुसत्ता संपन्न सरकारों की वजह से हर तरफ़ युद्ध चल रहे हैं। यही आज का संसार है, है या नहीं? एक तरफ़ ज़बरदस्त तकनीकी विकास है लेकिन उसके बराबर मानसिक तरक्की नहीं हो पाई है, इसलिए एक असंतुलन की सी हालत है; एक तरफ़ गजब की वैज्ञानिक प्राप्तियां हैं, और मानवीय दुखों का अंबार है, लोगों के दिल और हाथ खाली हैं। बहुत सी तकनीकें जो हमने सीखी हैं, वे बस हवाई जहाज़ बनाने और एक-दूसरे को मारने काटने के लिए ही हैं। तो यही है आज का संसार, जो कि खुद आप हैं। यह संसार कोई आपसे अलग नहीं है। आपका संसार, जो कि आप हैं, बहुत मेहनत से विकसित की गई बौद्धिकता और सूने दिलों का संसार है।

*Madras,
25 December 1982;
Mind Without
Measure.*

संकट बिलकुल सामने है। यह संकट कहीं संसार में नहीं है, यह परमाणु युद्ध का नहीं है, आसपास चल रही बेरहमी और बंटवारे में नहीं है। संकट हमारी चेतना में है, उसमें है जो हम हो गए हैं।

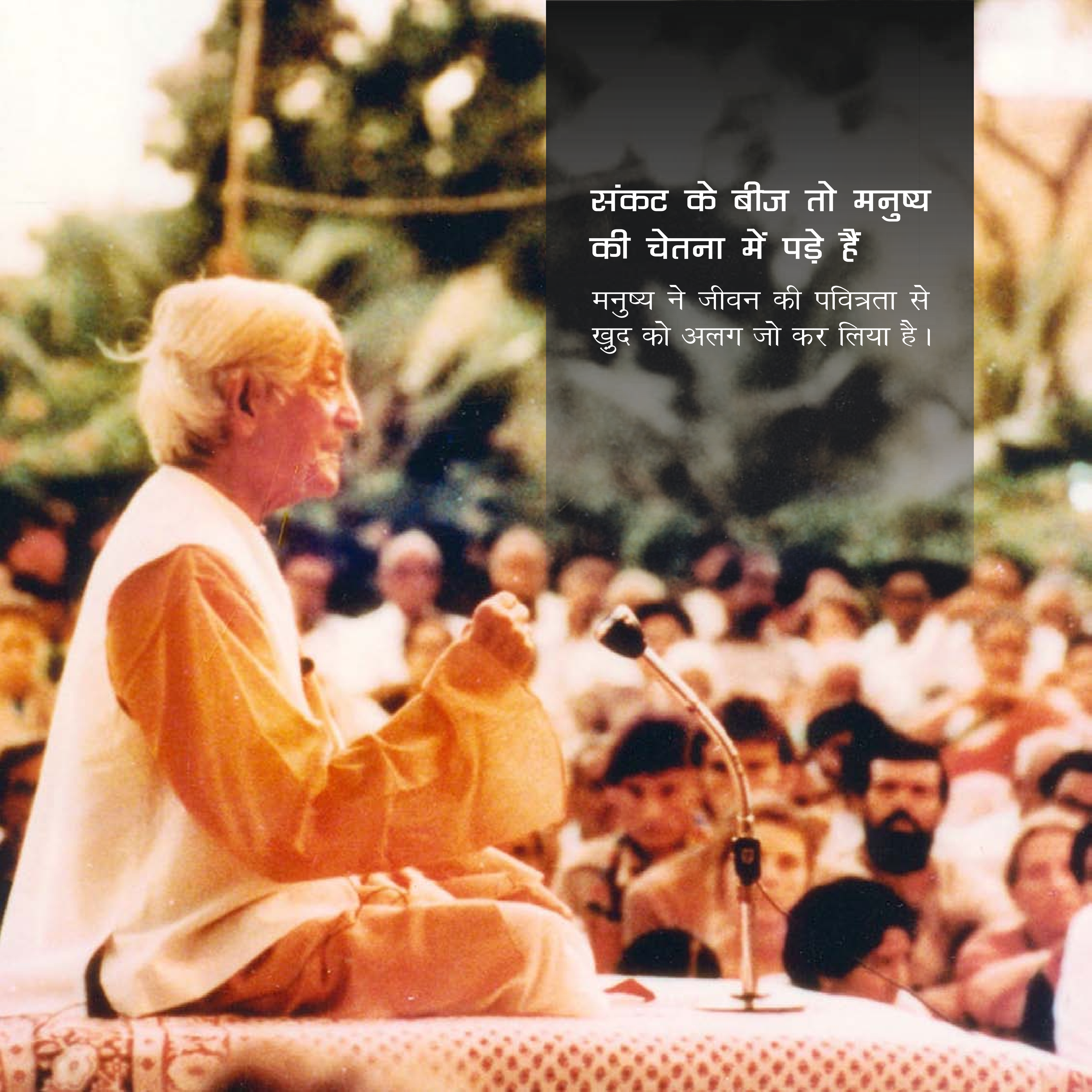
संकट के बीज तो मनुष्य की चेतना में पड़े हैं
मनुष्य ने जीवन की पवित्रता से खुद को अलग जो कर लिया है।

Bombay,
28 January 1968;
Meeting Life.

आदमी जो हज़ारों-हज़ारों सालों से इस धरती पर है, क्यों वह ऐसे दुःख और टकराव में फँसा है? ...अगर हम बढ़ती हुई आबादी, नैतिकता की कमी--जो तकनीकी ज्ञान और संवादहीनता के संगी-साथी हैं--जैसी आसान सी व्याख्याओं को एक तरफ़ रख दें, तो फिर इस दुःख का बुनियादी कारण, इसकी खास वजह क्या है? तो फिर इस तरह के देश में जहाँ अच्छाई, दयालुता, हत्या ना करने, और बेरहम ना होने जैसी परम्पराएं रही हैं--क्यों यहाँ पर एकदम सब ग़लत हो गया है?

Madras,
26 October 1947;
The Collected Works, Vol. IV.

पुराने दिनों में ऐसे लोगों का एक समूह था जो लालसा और सत्ता की चाह से मुक्त थे, लालच और वैर-भाव के बन्धनों से परे, वे समाज को रूहानी और नैतिक पतन से दूर रहने में मदद करते थे। ऐसे लोग जितने ज़्यादा होंगे, समाज और राज्य उतना ही ज़्यादा सुरक्षित होगा, और यही वजह है कि भारत जैसे सिर्फ एक या दो देश ही बचे रह पाए। चूंकि ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो दुनिया के इस बवंडर में फँसे हुए नहीं हैं, इसलिए आपका सामना ऐसे असाधारण संकट से है।

Bombay,
28 January 1978.

एक तरफ़ बीमारियों का दुःख है, इस बात का दुःख कि आदमी खुद को बिलकुल अलग-थलग महसूस करता है और फिर ग़रीबी का दुःख है, जब भी आप गंदगी में लिपटे हुए इन गरीब, हताश लोगों को देखते हैं और फिर जब आप दुनिया भर के जानवरों को मारे जाते हुए, उनका कत्ल होते, और प्रयोगशालाओं में उनकी चीरफाड़ होते हुए देखते हैं, तो उसका एक दुःख है।

25 February 1983;
Krishnamurti to Himself.

बड़ी अजीब बात है कि कुदरत के साथ हमारा इतना कम रिश्ता है। ऐसा कभी लगता ही नहीं कि धरती के सभी जीवों के लिए हमारे अंदर कुछ भावना है। अगर हम कुदरत के साथ एक गहरा और स्थायी सबंध बना पाते हैं तो फिर हम अपनी भूख के लिए किसी जानवर को नहीं मारेंगे; अपने फायदे के लिए हम कभी किसी बंदर, कुत्ते या गिनी पिग की चीरफाड़ नहीं करेंगे। अपने ज़ख्मों के इलाज के लिए, अपने शरीरों को ठीक करने के लिए हम कोई दूसरे रास्ते खोज लेंगे। लेकिन मन के घावों को भरना एक बिलकुल ही दूसरा मामला है। अगर आप कुदरत के साथ होते हैं तो वे घाव धीरे-धीरे भर जाते हैं।

The Whole Movement of Life is Learning: Letters to the Schools, Ch. 67.

जब कुदरत से हमारा नाता टूट जाता है, तो हम आपस में भी एक दूसरे से अलग–थलग हो जाते हैं। जब पंछियों से, डरे-से रहने वाले शर्मीले बटेरों से आपका नाता टूट जाता है, तब आप अपने बच्चे से और गली के उस पार वाले आदमी से भी अलग–थलग हो जाते हैं। जब आप खाने के लिए किसी जानवर को मारते हैं, तो आप उस संवेदनहीनता को बढ़ावा दे रहे होते हैं जो सरहद पार के उस आदमी को मारेगी। जब जीवन की इस विशाल लहर से आप कट जाते हैं तो आप सभी सबंधों से कट जाते हैं। तब आप––हवाई ख्वाहिशों, मांगों और दौड़–भाग से भरा अहंकार––यही सब कुछ हो जाते हैं, और आपके तथा दुनिया के बीच की खाई फैल कर अंतहीन टकरावों में बदल जाती है।

The Whole Movement of Life is Learning: Letters to the Schools, Ch. 70.

जब आप अपने चारों तरफ़ देखते हैं, आदमी के संसार में उतना नहीं जितना कि प्रकृति में, सितारों में, तो आपको एक अद्भुत व्यवस्था नज़र आती है, एक समतोल, और तालमेल। हर पौधे और हर फूल की अपनी ही व्यवस्था है, अपनी ही खूबसूरती; हर चोटी और हर वादी की अपनी ही एक लय है और स्थिरता भी। हालाँकि इंसान नदियों को रोकने की कोशिश करता है और उनके पानी खराब कर देता है, लेकिन उनका अपना बहाव है, दूर तक जाती उनकी धारा। आदमी को छोड़ कर, समुंदरों में, हवा में, दूर तक फैले हुए आकाश में, दिशाओं में एक निराली पवित्रता है, एक लयबद्ध जीवन। हालाँकि लोमड़ी मुर्गों को मारती है, और बड़े जानवर छोटे जानवरों पर पलते हैं, जो देखने में बेरहमी है वह ब्रह्मांड की तालबद्धता का आयोजन भर है, सिर्फ आदमी को छोड़ कर। जब आदमी कोई दखल नहीं देता तो वहाँ गजब की सुन्दरता और समरसता रहती है।

असल संकट

IIT-Bombay, 7 February 1984; Why are You being Educated?

तो, इस सारे अस्तित्व का अर्थ क्या है? हो सकता है कि आप इसे देखना ना चाहते हों, इससे बचना चाहते हों... आप अपने बीस-तीस साल भौतिक-शास्त्र, भाषाविज्ञान, जीव-विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, मनोविश्लेषण या मनोरोगों के अध्ययन में लगा सकते हैं; आप सालों-साल इसमें खर्च कर सकते हैं, और एक दिन या एक घंटा भर भी खुद यह पता लगाने में नहीं लगाते कि आप क्या हैं और क्यों इस तरह से जीवन जी रहे हैं।

Bombay,
10 February 1985;
That Benediction
is Where You are.

करने से मेरा मतलब है विभिन्न तरीकों से अपनी ऊर्जा को नष्ट करना, अलग-अलग धंधों में उसे गंवाना; क्या हम अपने पूरे जीवन को, अपने अस्तित्व को बरबाद कर रहे हैं? 'हाँ, मैंने बहुत दौलत जमा कर ली है, इसमें बहुत मज़ा है।' या अगर आप में कोई प्रतिभा या हुनर है, वह प्रतिभा एक धार्मिक जीवन के लिए खतरा है। यह हुनर एक उपहार है, एक क्षमता, किसी खास दिशा में हासिल एक कौशल, जो एक तरह की महारत है, विशेषज्ञता है। महारत एक तरह की खंडित प्रक्रिया है। तो ज़रूर आपको अपने आप से यह पूछना चाहिए कि क्या आप अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। आप अमीर हो सकते हैं, आपके पास हर तरह की योग्यताएं हो सकती हैं, आप किसी काम के माहिर हो सकते हैं, कोई महान वैज्ञानिक या एक कुशल व्यापारी, लेकिन आपके जीवन के अंत में क्या वह सब कुछ बेकार ही साबित हुआ न?

Saanen, 22July, 1973

आपकी संस्कृति कहती है: 'जीवन के अर्थ क्या हैं इसकी परवाह क्यों करनी; बस जी लें, इस कुरूपता, इस पाशविक वजूद, इस दुःख, पीड़ा, चिंता, इन सुखों, भय-भीतियों, इस बेइंतहा ऊब, इस अकेलेपन, इस सब को निभा लें; यह सारा कुछ आपकी ज़िन्दगी का हिस्सा है। आप इससे परे जा ही नहीं सकते; इसलिए बस मौज-मज़ा करें, मज़े को ही जीवन का मुख्य हासिल बना लें।'

और यही तो आप कर रहे हैं।

The Whole Movement of Life is Learning: Letters to Schools, Ch 28.

दुनिया भर में मनुष्यों में गिरावट आती जा रही है, कहीं ज़्यादा तो कहीं थोड़ा कम। जब सुख-भोग ही, वे निजी हों या सामूहिक, जीवन में सब कुछ बन कर रह जाएं--काम वासना के सुख, अपनी मर्ज़ी को थोपने का सुख, उत्तेजना का सुख, स्वार्थ का सुख, सत्ता और पोज़ीशन का सुख, अपने सुखों की पूर्ति की निरंतर माँग--तो गिरावट तय है। जब मानवीय रिश्ते अस्थिर हो जाएं, मौज-मज़ों पर आश्रित, तो गिरावट तयशुदा है। जब ज़िम्मेदारी अपना सारा अर्थ खो चुकी हो, जब दूसरों की कोई परवाह ना हो, न धरती की न समुंदर के संसार की, धरती और आसमान की यह उपेक्षा उस पतन का ही रूप है। जब उच्च स्थानों में पाखंड छा जाए, व्यापार में जब बेईमानी हो, झूठ जब हमारी आम बातों का हिस्सा हो जाए, जब कुछ लोगों के ज़ुल्म का बोलबाला हो, जब हर तरफ़ वस्तुएं ही छाई हों, तो यह सारे जीवन के साथ विश्वासघात होता है। तब मारो-मारो ही जीवन की एकमात्र भाषा रह जाती है। जब प्यार को सुख-भोग के रूप में लिया जाता है, तब मनुष्य खुद को जीवन की सुंदरता और पवित्रता से मानो काट लेते हैं...

जब मौज-मज़ा ही जीवन में सब कुछ हो जाए, संबंधों को बस इसी मकसद के लिए इस्तेमाल किया जाए, तो एक-दूसरे से कोई असल संबंध रह ही नहीं जाते। तब रिश्ते बेचने-खरीदने की चीज़ हो जाते हैं। जब तृप्ति या संतोष सुख-भोग पर ही टिका हो, और जब कभी सुख हासिल न हो पाए या उसे पूरा करने के कोई साधन न मिले, तो गुस्सा, सनकीपन और नफ़रत या कड़वाहट वजूद में आते हैं। सुखों के लिए यह निरंतर दौड़ असल में पागलपन ही है।

Bombay,
15 February 1948;
The Collected Works, Vol. IV.

क्यों आदमी ऐंद्रिय सुख में फँसकर रह गया है? ...यह एक ज्वलंत मुद्दा बन गया है क्योंकि आज के समाज में हर संभव तरीके से इसको हवा दी जा रही है। अख़बार, सिनेमा और मैगजीन सब कामुकता को हवा देते हैं। इश्तहारों में आपका ध्यान खींचने के लिए औरत की तस्वीरें लगाई जाती हैं। अंदरूनी और बाहरी उद्दीपन को बढ़ावा दिया जाता है, बड़े जतन के साथ उसे बुना जाता है । मौजूदा समाज बुनियादी तौर पर ऐंद्रिय मूल्यों की ही उपज है। चीज़ें, सत्ता, ओहदे, नाम और श्रेणी ही यहाँ सब कुछ है। इंद्रियजन्य मूल्यों की ही आपके जीवन में प्रमुख अर्थवत्ता रह गयी है... आपके जीवन खोखले हैं, खाली, पैसा कमाने का रोज़ का रूटीन, ताश खेलना, सिनेमा जाना, और किताबें पढ़ लेना, बस यही सब।

Varanasi,
22 January 1954;
Leaving School,
Entering Life.

अमीर लोग खुद को नाइट क्लबों में भुला देने चाहते हैं, तरह-तरह के मनोरंजन में, बड़ी-बड़ी गाड़ियों और सैर-सपाटे में। जो चतुर-चालाक हैं वे भी खुद को भुलाना चाहते हैं, इसलिए वे नयी-नयी चीज़ें गढ़ने लगते हैं, अनोखे-निराले विश्वास। मूर्ख भी खुद को भूल जाना चाहते हैं, इसके लिए वे दूसरों के पीछे हो लेते हैं, गुरुओं के पीछे जो उन्हें बताते हैं कि क्या करना है। महत्त्वाकांक्षी लोग भी कुछ-न-कुछ करते रहने की धुन में खुद को भुला देना चाहते हैं। सो हम सभी, ज्यों-ज्यों उम्र पकती जाती है, जैसे-जैसे बड़े होते हैं हम, खुद को भुलाते रहना चाहते हैं।

Commentaries on Living, Ch:3

एक बेचैन मन को अभिव्यक्तियों में, कर्म में एक बदलती जाती विविधता की दरकार होती है; इसमें कुछ-न-कुछ भरा रहे, या यह व्यस्त रहे; इसे संवेदनों की, सनसनी की खुराक चाहिए, हमेशा बढ़ती मात्रा में, तुरत-फुरत बदलती रहने वाली रुचियां; और गपशप में ये सारी चीज़ें होती हैं। ज़्यादातर लोगों को दूसरों के मामले की ही लगी रहती है। जिस तरह से वह ढेरों पत्रिकाएं और अखबार पढ़ा करते हैं, उनके चटपटे कॉलम, कितने कत्ल हुए, कितने तलाक़, उस सब में वही सारे सरोकार झलकते हैं। इस तरह हम ज़्यादा ही ज़्यादा बाहर की तरफ़ झुकते चले जाते हैं और अंदर से खोखले होते जाते हैं। जितना हम बाहर की तरफ़ झुकते हैं, उतनी ही ज़्यादा सनसनी और भटकाव की हमें ज़रूरत लगती है। आधुनिक जीवन ऐसी सतही गतिविधियों और भटकावों को हवा देता है।

Krishnamurti to Himself, 18 March, 1983

लगता नहीं कि हम भविष्य की तरफ़ कुछ खास ध्यान दे रहे हैं। टेलिविज़न पर आप सुबह से देर रात तक मनोरंजन ही मनोरंजन देखते हैं। बच्चों का मनोरंजन किया जा रहा है। विज्ञापनों में भी इस बात का ख्याल रखा जाता है कि आपका मनोरंजन होता रहे। और यही दुनिया भर में चल रहा है। इन बच्चों का भविष्य क्या होगा? एक मनोरंजन खेलों का है--तीस-चालीस हज़ार लोग कुछ लोगों को मैदान में देख रहे हैं और गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहे हैं... दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में यही सब देखते हुए, यह देखते हुए कि कैसे मन खेलों में, बहलाव और मनोरंजन में लगा हुआ है, अगर हमारा थोड़ा भी सरोकार इस सबसे हो तो यह सवाल उठता ही है कि भविष्य क्या है। वही सिलसिला बस बदले हुए रूपों में? मन-बहलाव के नए-नए तरीके?...

जब मनोरंजन का व्यापार हर चीज़ पर छा जाएगा, जैसा कि धीरे-धीरे यह करता जा रहा है, जब नौजवानों को, विद्यार्थियों और बच्चों को लगातार सुख और मज़े के पीछे, रोमांटिक कामुकता और कल्पनाओं के पीछे दौड़ने को उकसाया जा रहा है, जब निग्रह और संयम जैसे शब्द पीछे धकेले जा रहे हैं, कभी उनके बारे में सोचा भी नहीं जाता... आप शायद यह सुनना भी नहीं चाहते कि संयम का मतलब क्या है। जब बचपन से ही आपको ऐसे पाला-पोसा जाता है कि खुद को बहलाना कैसे है और कैसे मनोरंजन के ज़रिये खुद से भागना है – वह मनोरंजन धार्मिक किस्म का हो या किसी और तरह का – और जब ज़्यादातर मनोवैज्ञानिक यही कहते हों कि आपको हर चीज़ व्यक्त कर देनी चाहिए, जो भी आप महसूस करते हों, और किसी भी चीज़ को भीतर रोकना या उसको नियंत्रित रखना नुकसानदायक है जो तरह-तरह के मानसिक असंतुलनों की तरफ़ ले जा सकता है, तो आप स्वभावतः अधिकाधिक खेलों, मन-बहलाव और मनोरंजन की दुनिया में खोते चले जाते हैं, यह सारा कुछ आपको उससे दूर ले जाने में मदद करता है जो कि आप हैं।

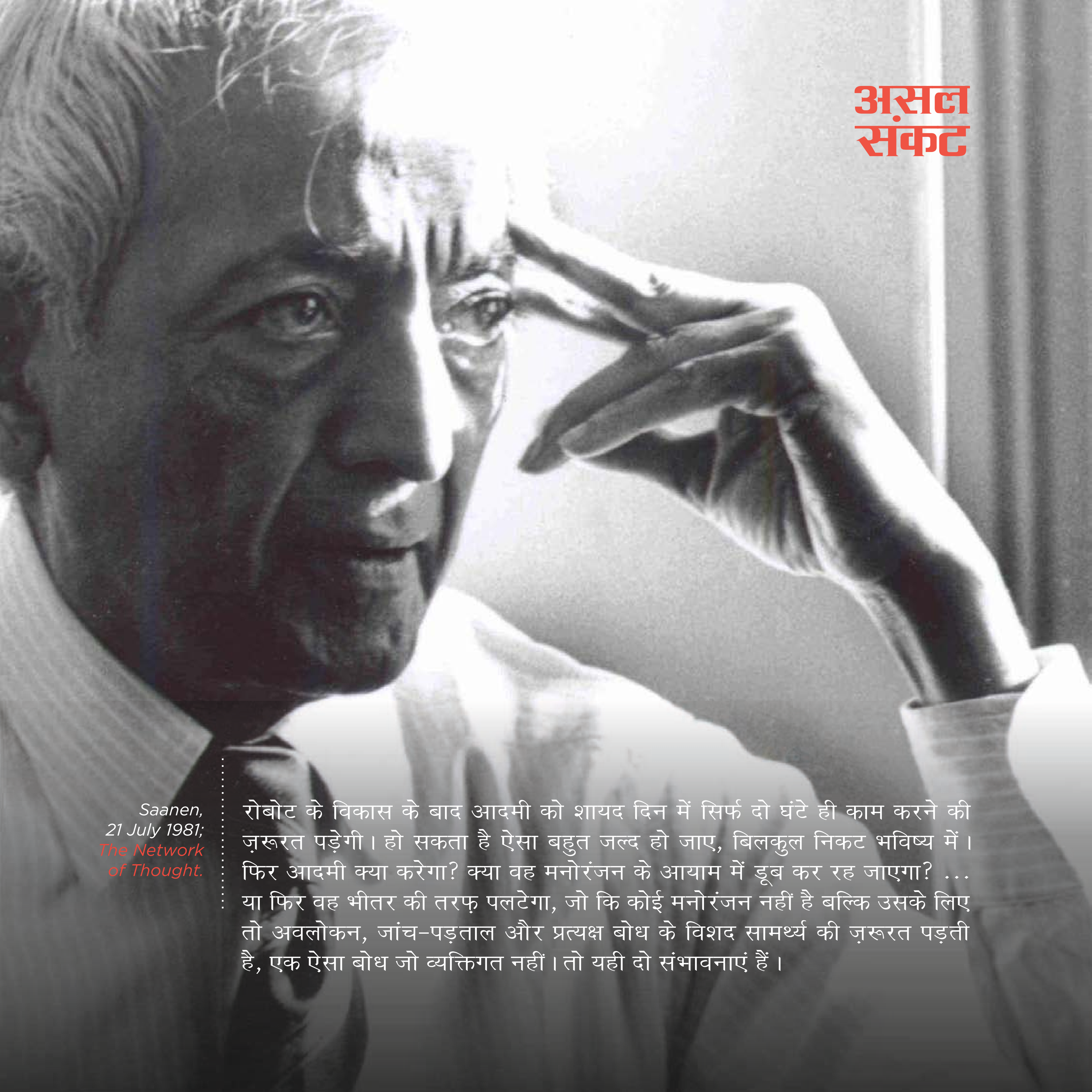

असल संकट

Saanen,
21 July 1981;
The Network of Thought.

रोबोट के विकास के बाद आदमी को शायद दिन में सिर्फ दो घंटे ही काम करने की ज़रूरत पड़ेगी। हो सकता है ऐसा बहुत जल्द हो जाए, बिलकुल निकट भविष्य में। फिर आदमी क्या करेगा? क्या वह मनोरंजन के आयाम में डूब कर रह जाएगा? ... या फिर वह भीतर की तरफ़ पलटेगा, जो कि कोई मनोरंजन नहीं है बल्कि उसके लिए तो अवलोकन, जांच-पड़ताल और प्रत्यक्ष बोध के विशद सामर्थ्य की ज़रूरत पड़ती है, एक ऐसा बोध जो व्यक्तिगत नहीं। तो यही दो संभावनाएं हैं।

The World Within, Ch:75.

आप अपनी ही क्षमताओं और प्रतिभाओं में कैद हैं, और वे खतरनाक दोस्त हैं। वे अपने आप में ही एक लक्ष्य बन जाती हैं और बहुत मुसीबतों और दुखों की तरफ़ ले जाती हैं। आपका खाना, आपके कपड़े, उठने-बैठने के आपके ढंग, और आपके सुख, आपको ढीला और सुस्त बना रहे हैं; आपका मन असंवेदनशील होता जा रहा है और समझने-बूझने की अपनी फुर्ती को गँवाता जा रहा है...। अगर आप सतही मन में चलने वाली अनेकों गतिविधियों के बारे में सजग हो जाते हैं, इसकी बकबक को, इसकी उछल-कूद, दलीलबाज़ी, और निष्कर्षों को देख पाते हैं, तो इस जागरूकता के ज़रिये शांति और स्पष्टता का आगमन होता है।

Poona,
19 September 1948;
The Collected Works, Vol. V.

इसलिए महत्त्व की बात है... स्वबोध, स्वयं को जानना। बिना खुद को समझे, संसार में व्यवस्था नहीं आ सकती; अपने भीतर की सोच, भावना और कर्म की समग्र प्रक्रिया की तहकीकात किए बिना, संसार में अमन, व्यवस्था और सुरक्षा का कायम हो पाना एक तरह से असंभव ही है। इसलिए अपने आप का अध्ययन प्राथमिक महत्त्व का है, और यह पलायन की प्रक्रिया, बच कर भागने का सिलसिला नहीं है।

स्वयं का यह अध्ययन अकर्म, निठल्लापन नहीं है। बल्कि इसके ठीक उलट, इसमें तो बहुत ही गजब की सजगता चाहिए; जो कुछ भी हम करते हैं उसके प्रति, एक ऐसी जागरूकता जिसमे कोई फ़ैसला नहीं है, कोई निंदा-आलोचना या दोष लगाना नहीं है। अपना रोज़ाना का जीवन जीते हुए अपने होने की कुल प्रक्रिया के प्रति यह सजगता, कोई सिकुड़ने वाली बात नहीं है, बल्कि खुलते और खिलते जाना है, निरंतर स्पष्ट होते जाना; और व्यवस्था इसी सजगता से आती है, पहले अपने आप में और फिर बाहर अपने सबंधों में।

Montevideo, 26 June 1935; The Collected Works, Vol. II.

अगर आप दुःख से नहीं गुज़र रहे, अगर आपके भीतर द्वंद्व, टकराव नहीं हैं, कोई समस्या नहीं है, आपके जीवन में कोई संकट, कोई 'क्राइसिस' नहीं है, तो कहने को खास कुछ बचता नहीं है। यानी कि, अगर आप सोए हुए हैं तो जीवन के बहाव को पहले आपको जगाना होगा। लेकिन जब आप दुःखों से दो-चार होते हैं तो आम तौर पर होता क्या है? आप एकदम से कोई इलाज ढूंढते हैं जिससे उस दुःख-पीड़ा से आपको राहत मिले। सो चैन-आराम को ढूंढते-ढूंढते धीरे-धीरे आप खुद को फिर से सुला देते हैं, खुद अपनी ही कोशिशों से... जब मन जाग उठता है कोई धक्का लगने पर जिसे आप दुःख कहते हैं, यही असल घड़ी है दुःख के कारण की खोज-बीन की, बिना किसी राहत की तलाश के।

Ojai,
18 June 1934;
The Collected Works, Vol. II.

अगर आप उस द्वन्द्व, उस टकराव के यानी उस युद्ध के प्रति अचेत हैं जो आपके 'स्व' के और वातावरण के बीच में चल रहा है, अगर आप उस जंग के प्रति बेहोश हैं, फिर आप और-और उपचारों की तलाश में क्यों हैं? तो रहें अचेत। हालात को खुद ही वह द्वन्द्व पैदा करने दें जो ज़रूरी है, आपको उसके पीछे भागने की, झूठ-मूट या बनावटी तरीकों से ऐसा कोई द्वंद्व खड़ा करने की ज़रूरत नहीं है जो आपके दिलो-दिमाग में है ही नहीं। तो आप कृत्रिम रूप से कोई द्वन्द्व रच लेते हैं क्योंकि आपको डर है कि आप कुछ चूक रहे हैं। जीवन नहीं चूकेगा आपको, अनछुआ नहीं छोड़ेगा।

*Varanasi,
16 December 1952;
The Collected
Works, Vol. VII.*

जब आप घर के दरवाज़े–खिड़कियाँ बंद करके अंदर बैठ जाते हैं, आपको लगता है अब सब ठीक है, कोई खतरा नहीं, एकदम सुरक्षित। लेकिन जीवन ऐसा नहीं है। जीवन लगातार दरवाज़ा खटखटा रहा है, हर वक्त खिड़कियाँ खोल देने की कोशिश में है ताकि आप कुछ और भी देख सकें, लेकिन अगर आप डरे हुए हैं और सभी खिड़कियाँ आपने बंद कर ली हैं, तो खटखटाहट तेज़ होती जाती है। सो जितना ज़्यादा आप बाहरी सुरक्षाओं से चिपकते हैं, उतना ही जीवन आगे आकर आपको और ज़ोर से धक्का देता है।

Madras,
29 December 1979;
The Seed of a Million Years.

सो, वह क्या है जो आपको बदलेगा? कोई संकट? सिर पर पड़ी कोई मुसीबत? दुःख? आँसू? यह सब तो होता रहा है--एक के बाद एक आपदा। बेहिसाब आँसू आप बहा चुके हैं, और कुछ भी आपको बदलता हुआ नहीं लगता क्योंकि आप इस बदलाव का ज़िम्मा किसी और को सौंप बैठे हैं...। कोई यह नहीं कहता, 'मैं इसका खुद पता लगाऊंगा।'

असल संकट

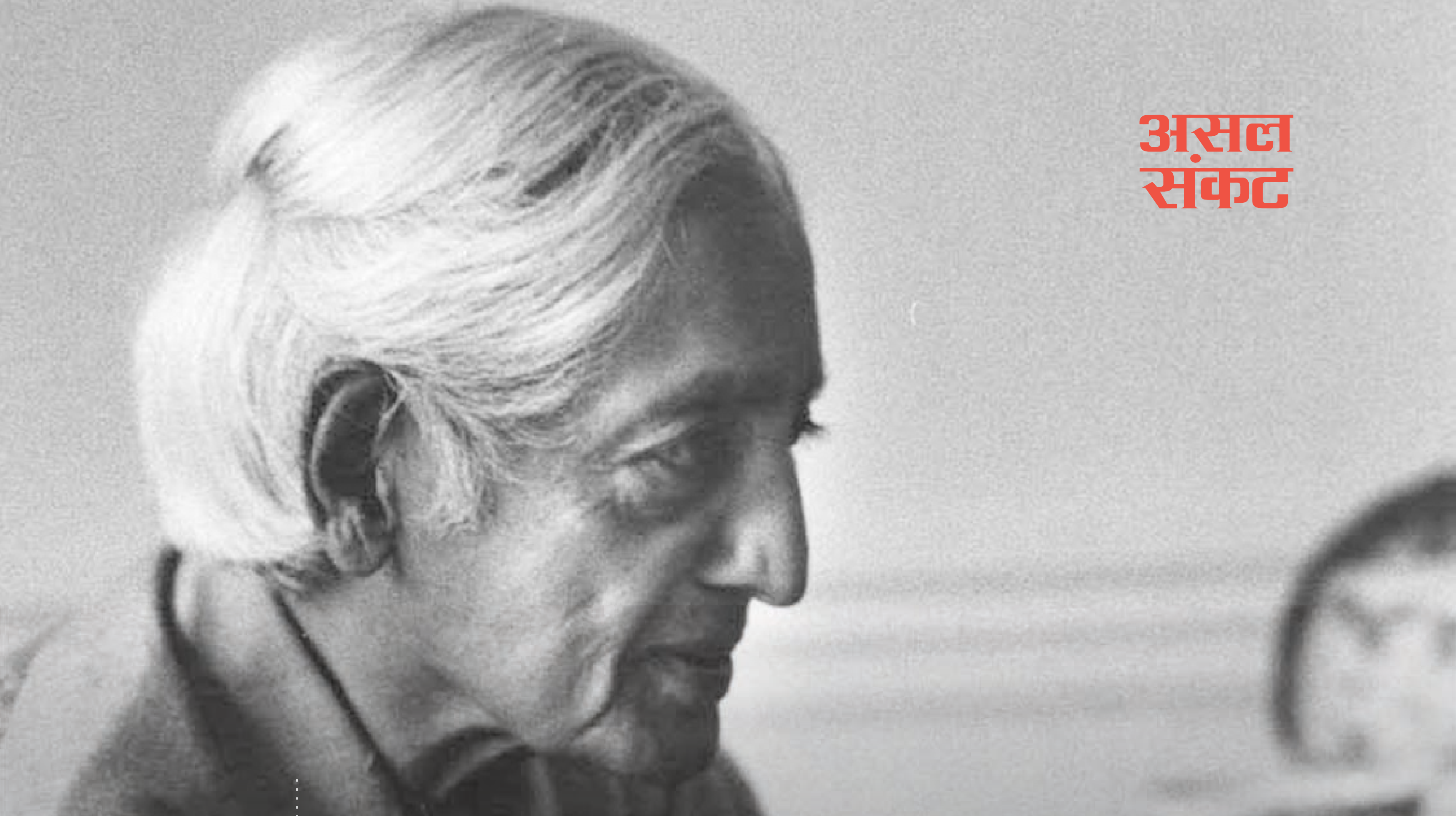

Bombay, 14 December 1969.

आपने अपनी ज़िन्दगी को क्या बना लिया है?... आपको यह जीवन मिला है, यह अद्भुत शै जिसका नाम जीवन है, जिसमें दुःख है, सुख है, डर, अपराधबोध और जीवन की तमाम यंत्रणाएं हैं, अकेलापन है, जीवन की हताशा और जीवन की खूबसूरती है। आपके पास यह सब रहा है, और आपने इसके साथ क्या कर डाला है? जब आप अपने आप से यह पूछें, तो दुःख से बोझिल होकर रात न बिताएं, क्योंकि आपने कुछ किया ही नहीं, कतई कुछ नहीं किया। एक जीवन आपको दिया गया था, संसार की सबसे कीमती चीज़, और आपने क्या किया? उसे तोड़ा-मरोड़ा, यातनाएं दीं, टुकड़े-टुकड़े कर दिया, बाँट दिया, उसमें हिंसा और तबाही भर दी, नफरत, जहाँ न प्रेम है, न करुणा, और न ही जोश-ओ-जज़्बा। तो जब आप यह सवाल पूछते हैं कि आपने अपने जीवन का क्या किया, तो बरबस आपकी आँखें भर आती हैं। लेकिन ये आँसू इसलिए हैं क्योंकि आप अतीत के बारे में, जो आप कर सकते थे उसके बारे में सोच रहे हैं, ये आत्मदया के, खुद पर तरस खाने वाले आँसू हैं।

*Ojai,
17 June 1945;
The Collected
Works, Vol. IV.*

हर्ष और प्रसन्नता अपने आप में मकसद नहीं हैं; हिम्मत और उम्मीद की तरह वे भी घटित होते हैं किसी ऐसे तत्त्व की खोज के दौरान जो अपने आप में ध्येय है, मंज़िल है। यही वह ध्येय है जिसकी बड़े धीरज और मेहनत के साथ खोज की जानी ज़रूरी है, सिर्फ इस अन्वेषण से ही हमारी अशांति और तकलीफ़ों का अंत होगा। इस अन्वेषण की ओर जो यात्रा है वो खुद अपने में से होकर की जाती है; हर अन्य यात्रा एक भटकाव है जो अज्ञान और भ्रम की तरफ़ ले जाता है। अपने भीतर की यह यात्रा आप किसी परिणाम की खातिर, द्वन्द्व और दुःख के समाधान के लिए नहीं कर रहे होते, इसलिए कि यह खोज अपने आप में ही निष्ठा है, प्रेरणा है।

Think on These Things, Ch:26.

हम एक ही मानवता हैं; यह धरती हम सब लोगों के लिए है, और प्यार के साथ इसकी सार-सँभाल करते हैं तो यह हम सबको खाना, कपड़ा और रिहाइश देती है। तो शिक्षा का काम सिर्फ आपको कुछ इम्तिहान पास करने के लिए तैयार करना भर नहीं है, बल्कि जीवन जीने के इस सारे मसले को समझने में आपकी मदद करना है। ...यह पता लगाना भी हमारी समस्या, हमारा काम है कि ईश्वर क्या है, क्योंकि वही हमारे जीवन की बुनियाद है। एक ठोस आधार के बिना कोई मकान ज़्यादा देर तक टिक नहीं सकता, और अगर हम ईश्वर या सत्य की खोज नहीं कर रहे, तो आदमी के ये तमाम चतुराई भरे आविष्कार अर्थहीन हो जाएंगे।

Think on These Things, Ch:17.

आप देख सकते हैं कि यह सारा कार्य विनाश और दुर्दशा, उथल-पुथल और हताशा की ओर ले जा रहा है। विशद विलासिताओं और घनघोर गरीबी की मौजूदगी आमने-सामने है, बीमार और भुखमरी, रेफ्रीजरेटरों और जेट हवाई जहाज़ों के संग-साथ। यह सब मनुष्य का ही कार्य है, और जब आप इसे देखते हैं, तो क्या अपने आप से ये नहीं पूछ बैठते, ”तो क्या बस यही सब है? क्या कुछ और नहीं है ऐसा जो मनुष्य का सच्चा, असल कार्य हो?“ यदि हम यह पता लगा सकें कि मनुष्य का असल कार्य क्या है, तो जेट हवाई जहाज़, वाशिंग मशीनें, पुल, होस्टल, इन सबका एक बिलकुल ही दूसरा अर्थ होगा। लेकिन बिना यह पता लगाए कि मनुष्य का सच्चा कार्य क्या है, महज़ सुधारों में, मनुष्य जो पहले ही कर चुका है उसीको नयी शक्ल देने में लगा रहना कहीं नहीं ले जाता है। तो क्या है मनुष्य का वह सच्चा, वास्तविक कार्य? निश्चित ही, मनुष्य का वास्तविक कार्य है सत्य का, ईश्वर का अन्वेषण करना; यह है प्रेम करना, और अपनी ही स्व-संलग्न गतिविधियों में न फँसा रहना। यह खोज लेने में ही कि सत्य क्या है, प्रेम विद्यमान होता है, और मनुष्य के मनुष्य के साथ संबंध में ये जो प्रेम है, यह एक भिन्न सभ्यता, एक नयी दुनिया की रचना करेगा।

Think on These Things, Ch:11.

सत्य क्या है, ईश्वर क्या है, यह खोजने की उत्कंठा ही एकमात्र वास्तविक उत्कंठा है, और शेष सभी उत्कंठाएं-अभीप्साएं तो गौण हैं, पूरक हैं। जब आप शांत पानी में कोई पत्थर फेंकते हैं, तो यह विस्तीर्ण होते हुए वृत्त, फैलते हुए घेरे बनाता है। ये फैलते हुए घेरे पूरक गतिविधियाँ हैं, सामाजिक प्रतिक्रियाएं; किंतु जो असली हलन-चलन है वह तो उस केंद्र में है, और वह है प्रसन्नता को, ईश्वर को, सत्य को खोजने-पाने हेतु गतिशीलता। और उसे आप तब तक नहीं खोज सकते जब तक आप भय में जकड़े हैं, किसी आशंका से आबद्ध हैं। जिस क्षण आशंका और भय उगते हैं, संस्कृति में गिरावट आने लगती है।

इसलिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि जब आप छोटे हैं, युवा हैं, तो आपको संस्कारबद्ध, 'कंडीशन्ड' नहीं होना है, अपने माता-पिता के, समाज के भय में नहीं अटका रहना है, ताकि आपमें इस अन्वेषण की यह समयातीत गतिशीलता रहे कि सत्य क्या है। और वे मनुष्य, जो खोज लेते हैं कि सत्य क्या है, ईश्वर क्या है-- केवल ऐसे ही मनुष्य एक नयी सभ्यता, एक नयी संस्कृति का सृजन कर पाते हैं।

Think on These Things, Ch:27.

असल धार्मिक आदमी सुधारों की चिंता नहीं करता, उसका सरोकार सिर्फ सामाजिक व्यवस्था में सुधार लाने से नहीं है; बल्कि वह तो इस खोज में है कि सत्य क्या है, और ये खोज ही समाज पर एक परिवर्तनकारी प्रभाव डालती है। इसीलिए यह ज़रूरी है कि शिक्षा का सरोकार प्रधानतया इस बात से हो कि कैसे वह सत्य अथवा ईश्वर की खोज में विद्यार्थियों के लिए मददगार साबित हो; शिक्षा का काम सिर्फ उन्हें मौजूदा समाज के ढाँचे में फिट होने के लिए तैयार कर देना भर नहीं है।

Saanen,
3 August 1975.

खोजना उसे है जो हमेशा–हमेशा से, अविकारी रूप से पवित्र है। और उसका आना तभी हो सकता है जब करुणा विद्यमान हो; यानी जब आप दुःख के पूरे मायनों को समझ लेते हैं––सिर्फ अपने दुःख की नहीं, बल्कि संसार भर के दुःख की अर्थपूर्णता को। संसार का दुःख एक सच्चाई है; वह तो सामने है। यह कोई सोच की जज़्बाती या रोमानी फड़फड़ाहट नहीं है। यह असल में मौजूद है, जैसा कि यह हममें है। और उस दुःख के साथ रहना–जीना है, ठीक उसकी तह तक जाना है, बिना उससे पलायन की कोशिश किए। जब आप पलायन नहीं करते, उससे भागते नहीं, तो आपके पास उसका सामना करने के लिए ज़बरदस्त ऊर्जा होती है। तभी आप उससे पार जा सकते हैं।... करुणा का आगमन तभी होता है जब आप दुःख के पूरे अर्थ को समझ चुके होते हैं, और अब दुखी नहीं होते। सिर्फ करुणा से आपूरित मन ही ध्यान में हो सकता है, और उसे पा सकता है, जो सदा से पावन है।

Think on These Things, Ch:17.

ईश्वर की, सत्य की खोज, पूरी तरह से भला होने का भाव--अच्छाई को, विनम्रता को विकसित कर लेना नहीं, अपितु किसी ऐसे तत्त्व की खोज जो मन की ईजादों और चालबाज़ियों से परे है, जिसका मतलब है कि उस कुछ के लिए एक भावना की विद्यमानता, उसमें जीना, वही होना--यही असल धर्म है। लेकिन यह आप तभी कर सकते हैं जब आप उस डबरे से बाहर आ जाएं जो आपने अपने लिए खोदा है और जीवन की नदी तक पहुँच जाएं। तब जीवन विस्मयजनक ढंग से आपकी देखरेख करता है क्योंकि अब आपकी तरफ से देखरेख का दखल नहीं रहता। फिर जीवन आपको जहाँ वो चाहे ले जाता है क्योंकि आप उसी का हिस्सा हैं; फिर सुरक्षा की कोई समस्या होती ही नहीं।

The World Within, Ch.76.

उस यथार्थ की खोज में, रोटी की मुश्किल नहीं होगी; लेकिन अगर हम सिर्फ रोटी के पीछे हैं, तो वह भी खटाई में पड़ जाएगी। रोज़ी-रोटी ही अपने आपमें अंतिम मूल्य नहीं है; जब हम उसी को आखिरी मान लेते हैं, उसी में बर्बादी है, वही खून-खराबा है, भुखमरी है। जो अनित्य है, क्षणिक है, उसी के ज़रिये उस शाश्वत को खोजना है। उस तक कोई मार्ग नहीं है, क्योंकि वह तो सदा मौजूद है।

The World Within, Ch:19.

केवल यथार्थ ही विद्यमान है, वह परम, उसके अलावा कोई द्वितीय नहीं। सिर्फ एक ही मानवता है और एक ही सदाचार, और उसके साक्षात्कार, उसे महसूस करने का तरीका किसी अन्य पथ, किसी अन्य व्यक्ति से हासिल नहीं होता, सिवाय आपके स्वयं के ज़रिये। अपनी स्वयं की मुक्ति को खोजें, और तब आप संसार को उसके भ्रम और टकराव, उसके दुःखों और वैर-विरोधों से मुक्त कर पाएंगे।

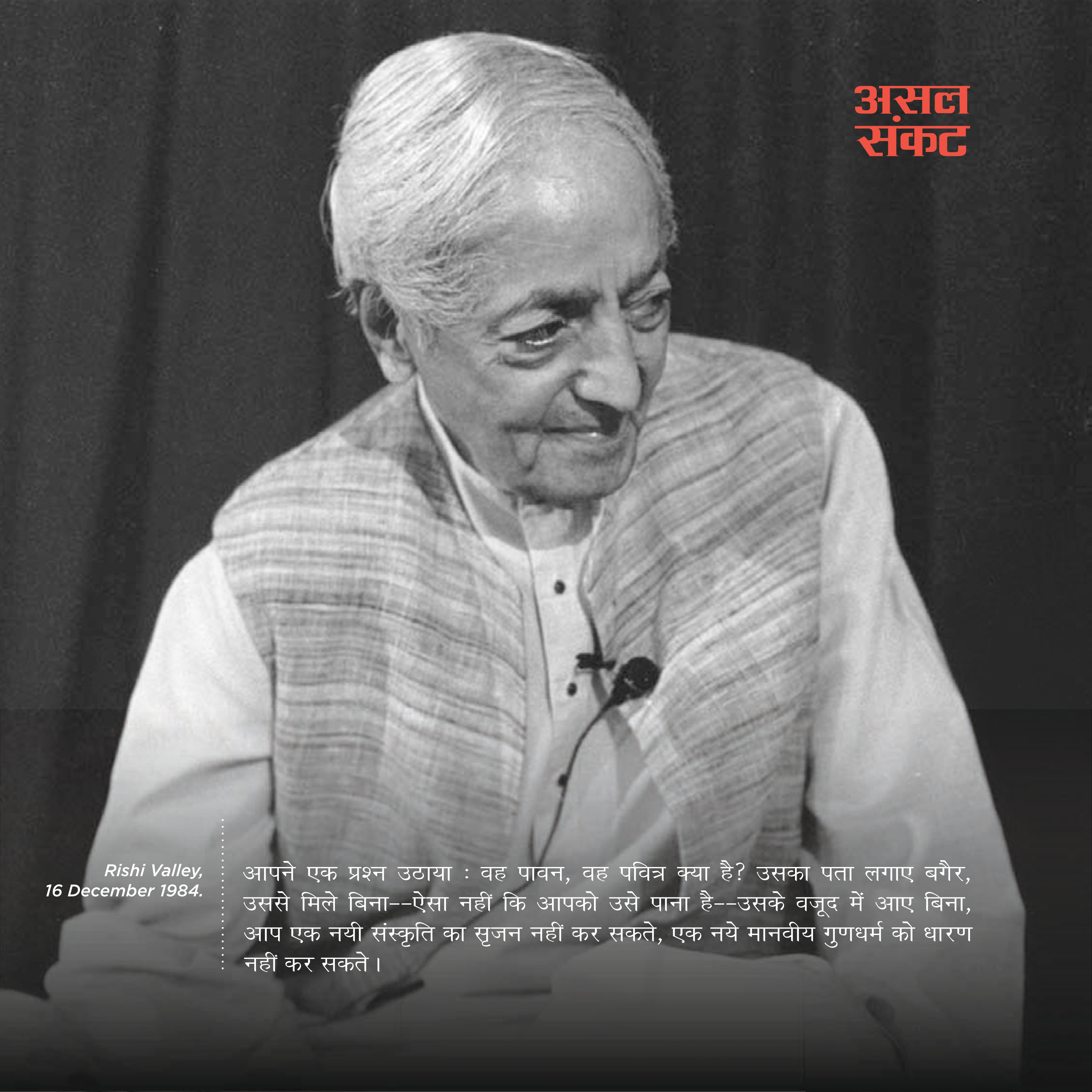

असल संकट

Rishi Valley,
16 December 1984.

आपने एक प्रश्न उठाया : वह पावन, वह पवित्र क्या है? उसका पता लगाए बगैर, उससे मिले बिना--ऐसा नहीं कि आपको उसे पाना है--उसके वजूद में आए बिना, आप एक नयी संस्कृति का सृजन नहीं कर सकते, एक नये मानवीय गुणधर्म को धारण नहीं कर सकते।

*Madras,
22 October 1947;
The Collected
Works, Vol. IV.*

आपको अपनी रोशनी खुद होना होगा...। हाथ की या मन की बनाई हुई चीज़ों से कोई उम्मीद नहीं है। हम टाल नहीं रहे हैं; हम सिर्फ़ इतना ही इशारा कर रहे हैं कि खाई के किनारे खड़े हो कर हम कुछ भी करें उससे गिरने का खतरा और बढ़ ही सकता है, उसमे और तेज़ी ही आ सकती है; सुरक्षा और खुशी इस खाई से सिर्फ दूर हटने में ही है। थोड़े से लोग जो इसे महसूस करते हैं, उन्हें संबोधि के केन्द्र निर्मित करने होंगे। मौजूदा संकट और सारी मानवीय समस्याओं से उबरने की एक ही राह है--ऐसी राह जो पलायन, भागने का तरीका नहीं है, ऐसी राह जो सनातन आनंद की तरफ़ ले जाती है।

Krishnamurti Foundation India
Vasanta Vihar, 124, Greenways Road, Chennai - 600028
Tel: 91-44-24937803 / 24937596 | info@kfionline.org | www.kfionline.org